आज की मुरली का सार --

बाबा ने कहा, दूसरे सतसगो में भी मनुष्य शांति में बैठते हे लेकिन उन्हें शांतिधाम का ज्ञान नहीं हैं.

बाबा ने हमें शांतिधाम का ज्ञान दिया हे, किसलिए?

- बच्चे समझे की आत्मा की शांति ओर लौकिक शांति में फर्क हे. आत्मा का स्वधर्म ही शांति हे, हम आत्माये असूल में शांतिधाम की निवासी हे ओर हमारे प्यारे बाबा भी शांतिधाम में ही रहते हे. ये सब बाते दुनिया वाले नहीं जानते ओर बहार सतसंगो में भटकते हे, शांति के लिए.

- बाबा ने बताया हे की अब हम संगमयुग पर हैं. ड्रामा का चक्र पूरा होने को हे. बाबा हमें वापस घर (शांतिधाम) ले जाने के लिए आये हे. बाबा ने कहा, ये पुरानी दुनिया विनाश होनी हे. हम जो भी इन आंखों से देखते हे वह सब खत्म हो जाना हे. तो हमें इस पुरानी दुनिया से वैराग्य आना चाहिये.

अब समझे, जब तक हमें पुरानी दुनिया से संपूर्ण वैराग्य नही आता, तब तक हम शांतिधाम को जानते भी, शांतिधाम का अनुभव इस ब्राह्मण जीवन में नहीं कर सकते.

आज की मुरली का सार हे, हम ब्राहमणों को शांतिधाम का अनुभव करने के लिए, पुराना शरीर, पुराने साधन, पुराने संबन्ध ओर पुरानी दुनिया से संपूर्ण वैराग्य आना चाहिये तब ही हम प्यारे शिवबाबा के संग का ओर शांतिधाम की सच्ची शांति का अनुभव कर सकते हे.

ॐ शांति.